मैथिली (प्रतिष्ठा)
बी०ए० (भ) पार्ट-1
पेपर-1

बसंत कुमार
अतिथि शिक्षक
दिनांक - २५/०७/२४

प्रकरण - विद्यापति

विद्यापतिक दोसर अवहट्ट रचना अछि 'कीर्तिपताका', एहिमे महाराज शिवसिंह कें यशोगान कयने छथि। कीर्तिपताका मुख्यतः छन्दमे अछि, शिवसिंहक शौर्य वर्णनक संगहि शृंगार भावक वर्णन सेहो अछि।

मैथिली नाटक 'गोरक्षविजय':- ई कीर्तनियाँ नाट्य परम्पराक आधारित अछि, डॉ. जयकान्त मिश्र एहि नाटककें मैथिली कीर्तनियाँ नाट्य परम्पराक श्रीगणेश मानैत छलाह।

एहि नाटकमे शृंगार, अद्भुत, शान्त रसक अभिव्यक्ति भेल अछि तथा एकर कथावस्तुक केन्द्रमे गोरक्षनाथ आओर मत्स्येन्द्रनाथक चरित अछि। ई नाटक विद्यापति महाराज शिवसिंहक समयमे कयने छलाह

विद्यापति संस्कृत आओर अवहट्टमे पर्याप्त रचना कयलनि मुदा हिनका व्यापक लोकप्रियता मैथिली पदावलीक रचना कारणें

गेलनि। विद्यापति श्रृंगार एवं स्थायी रति-भावक अभिव्यक्तिक संगहि लोक भाषाकेँ काव्यमे स्वीकार करैत लोकचेतनाक व्यापक लोकभावकेँ अपन महेशवाणी, नचारीमे सम्वेदनशीलताक संग व्यक्त कयलनि।

शेष आगिला अंकमे